ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

इस अंक का मूल्य : 10 रु० एक प्रति
वर्ष 46, अंक 18
सोमवार 27 मार्च, 2023 से रविवार 2 अप्रैल, 2023
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती
के आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य समाज का 148 वां स्थापना दिवस समारोह उत्साह पूर्वक सम्पन्न

माननीय श्री अमित शाह जी, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री रहे मुख्य अतिथि

महर्षि दयानन्द की प्रेरणा के अनुसार काम कर रही हैं- मोदी सरकार - अमित शाह

आर्य समाज के योगदान के उल्लेख के बिना अधूरा है भारत की आजादी का इतिहास - अमित शाह

गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी की
अध्यक्षता में आर्य समाज स्थापना दिवस संपन्न

नववर्ष की पूर्व संध्या पर यज्ञ एवं सम्मान समारोह की अविस्मरणीय झलकियां

यज्ञ में आहुति देते हुए एवं आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की बच्चियों के साथ सामूहिक चित्र में माननीय श्री अमित शाह जी एवं महामहिम आचार्य देवव्रत जी

पीत वस्त्र द्वारा स्वागत करते हुए श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी एवं लोगो भेंट करते हुए श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी

यज्ञ का प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए श्री पूनम सूरी जी एवं आचार्य जी तथा वेद भेंट करते हुए श्री प्रकाश आर्य जी एवं बाबू गंगा प्रसाद जी

महर्षि की प्रतिकीर्ति भेंट करते हुए श्री अशोक चौहान जी एवं श्री सुदर्शन शर्मा जी और पीतवस्त्र द्वारा स्वागत करते हुए श्री सुरेंद्र रैली

आचार्य जी को यज्ञ का प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए श्री पूनम सूरी जी, श्री अशोक चौहान जी, श्री सुदर्शन शर्मा जी

समारोह के अवसर पर विशिष्ट महानुभावों का स्वागत एवं सम्मान

श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी को सम्मान पत्र भेंट करते हुए श्री अशोक कुमार चौहान जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी एवं श्री पूनम सूरी जी

आचार्य जी को लोगो भेंट करते हुए श्री योगेश मुंजाल जी, श्री राकेश ग्रोवर जी एवं श्री राधाकृष्ण आर्य जी

आचार्य जी को महर्षि की प्रतिकीर्ति भेंट करते हुए श्री विकास आर्य जी

आचार्य जी का स्वागत करते हुऐ दिल्ली आर्य पुरोहित सभा के धर्माचार्य गण

श्री जोगेंद्र खट्टर जी एवं श्रीमती सुषमा शर्मा जी को महर्षि दयानन्द की प्रतिकृति भेंट करते हुए माननीय श्री अमित शाह जी

भजनों की प्रस्तुति देते हुए श्री अंकित उपाध्याय एवं उनकी टीम

आर्य समाज द्वारा व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व कल्याण के लिए दो वर्षीय प्रस्ताव ओम् की ध्वनि के साथ हुए पारित

विनय आर्य जी द्वारा आर्य समाज की ओर से विशेष प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए, मंचस्थ महानुभाव सहित आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता सदस्य और आर्यजन ओम् ध्वनि के साथ हाथ उठाकर पारित करते हुए।

1. प्रदूषण मुक्त वातावरण एवं आत्मनिर्भर भारत की संरचना को मूर्त रूप देने के लिए आर्य समाज की समस्त इकाई अगले दो वर्षों में अपनी ऊर्जा पत का न्यूनतम 50% सौर उर्जा पर परिवर्तित करने का संकल्प अभिव्यक्त करती है॥
2. भारत की एकता और अखंडता के लिए कार्य कर रही अलगाववादी ताकतों के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा उठाए हर कदम का आर्य समाज पूर्ण समर्थन करता है।
3. भारत सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में समलैंगिक विवाहों का विरोध करते हुए शपथ पत्र दाखिल किया है। आर्य समाज सरकार के इस कदम का स्वागत एवं समर्थन तो करता ही है एवं साथ में सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष रखने का आश्वासन देता है।
4. हिंदी भाषा की उन्नति हेतु चिकित्सा की उच्च स्तरीय पढ़ाई का पाठ्यक्रम हिंदी में लागू करने के कदम का आर्य समाज हार्दिक अभिनंदन करता है।

माननीय श्री अमित शाह जी, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री (भारत सरकार) द्वारा

आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस समारोह पर दिया गया ऐतिहासिक भाषण

नई दिल्ली, 21 मार्च 2023

आज के इस महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्यक्रम में मेरे साथ मंच पर उपस्थित महामहिम गुजरात के राज्यपाल श्रीमान् आचार्य देवव्रत जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबधंन कमेटी के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी जी, स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी, डॉ. अशोक कुमार चौहान जी, श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री गांगा प्रसाद जी, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री राधाकृष्ण आर्य जी और यहां पर उपस्थित स्वागत समिति के सभी सदस्यगण और इतनी बड़ी संख्या में आए हुए आर्य बंधु-भगिनियों को मेरा प्रणाम, नमस्कार!

आज का दिन हम सभी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण दिन है, क्योंकि आज की तारीख से ठीक एक दिन पूर्व की तारीख में वर्ष प्रतिपदा के दिन महर्षि दयानंद जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

आर्य समाज की स्थापना से महर्षि दयानंद ने सालों से सोई हुई भारतीय आत्मा को पुर्नजागृत करने का काम किया है। महर्षि दयानंद वह व्यक्ति थे, जिन्होंने वेद-व्यास के बाद वेदों के उद्धार का कार्य किया एवं वेदों को मूल स्वरूप में पुर्नस्थापित करने का काम किया। देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक जागरण को तीव्र गति से शुरुआत देने वाले स्वामी दयानंद जी, अनेक स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत भी रहे।

स्वतंत्रता के आंदोलन के दिनों में भारत स्वतंत्रता-संग्राम और समाज सुधार के दो मोर्चे पर समानांतर लड़ाई लड़ रहा था। एक लड़ाई आतंरिक थी, एक वाह्य। इस दृष्टिकोण से यह बेहद

> आर्य समाज की स्थापना से महर्षि दयानंद ने सालों से सोई हुई भारतीय आत्मा को पुर्नजागृत करने का काम किया है। महर्षि दयानंद वह व्यक्ति थे, जिन्होंने वेद-व्यास के बाद वेदों के उद्धार का कार्य किया एवं वेदों को मूल स्वरूप में पुर्नस्थापित करने का काम किया।

महत्त्वपूर्ण है कि महर्षि दयानंद जी ने देश में अनेक सामाजिक सुधारों का भी सूत्रपात किया। इस पुनीत कार्य हेतु महर्षि दयानंद जी का इस देश पर, इस पूरी सृष्टि पर युगों-युगों तक उपकार रहेगा। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके अपने विचारों को और कार्यों को स्थायित्व देने का काम किया। मैं आज इस अवसर पर महर्षि दयानंद जी को हृदय से प्रणाम करते हुए अपनी बात की शुरुआत करना चाहता हूँ।

> स्वराज और स्वधर्म के बारे में स्वभाषा में बोलना जिस युग में पाप था, उस युग में निर्भीकता के साथ समग्र भारत के अंदर इन तीनों तत्त्वों का प्रचार-प्रसार कर अनेक लोगों को इसके साथ जोड़ने का काम महर्षि दयानंद जी ने किया।

आज के परिदृश्य की पृष्ठभूमि देखें तो जिस 'आजादी के अमृत-महोत्सव' को पूरा देश मना रहा है, उस स्वतंत्रता का उद्घोष करने वाले आरंभिक लोगों में महर्षि दयानंद थे। स्वराज और स्वधर्म के बारे में स्वभाषा में बोलना जिस युग में पाप था, उस युग में निर्भीकता के साथ समग्र भारत के अंदर इन तीनों तत्त्वों का प्रचार-प्रसार कर अनेक लोगों को इसके साथ जोड़ने का काम महर्षि दयानंद जी ने किया। महर्षि दयानंद जी की 200वीं जन्म-जयंती मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार ने मनाने का निर्णय कर लिया है, और मोदी जी ने 12 फरवरी को आपके कार्यक्रम में आकर महर्षि दयानंद के विचारों को न केवल देश के सामने, बल्कि समूची दुनिया के समक्ष आत्मविश्वास और सम्मान के साथ रखने का काम किया है।

मेरे जैसे व्यक्ति के लिए यह आत्मगौरव की बात है कि ईश्वर ने उसी भूमि पर जन्म लेने का सौभाग्य दिया, जहाँ से महर्षि दयानंद जी आए थे। यह मेरे जैसे कार्यकर्ता के लिए बहुत गर्व की बात है। मैं आज आर्य समाज के सभी बंधु-भगिनियों को कहना चाहता हूँ कि नरेंद्र मोदी जी जो देश-जागरण का काम कर रहे हैं, इसकी मूल संकल्पना हम लोगों ने महर्षि दयानंद जी के जीवन से और उनके कर्तव्यों से ही लिया है।

> महर्षि दयानंद जी ने अंधश्रद्धा की बेड़ी में जकड़े हुए भारतीय समाज को झंकझोरकर जागृत किया एवं कुरीतियों से मुक्त किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से समस्त जगत के सामने 'सत्य का वास्तविक स्वरूप' रखने का काम महर्षि दयानंद जी ने किया।

महर्षि दयानंद जी ने अंधश्रद्धा की बेड़ी में जकड़े हुए भारतीय समाज को झंकझोरकर जागृत किया। एवं कुरीतियों से मुक्त किया **'सत्यार्थ प्रकाश'** के माध्यम से समस्त जगत के सामने 'सत्य का वास्तविक स्वरूप' रखने का काम महर्षि दयानंद जी ने किया। इतना ही नहीं, उन्होंने अंग्रेजों के शासन के सामने निर्भीक होकर क्रांतिवीर बनने की प्रेरणा का विकास इस देश की आबादी के सामने किया। उन्होंने आजादी के लिए लड़ने का देश को हौसला दिया और आर्य समाज के रूप में एक ऐसी परांपरा की स्थापना की जो सालों-साल तक भारत की उन्नति का कारक बना रहा है और हमारे धर्म के सभी उच्च विचारों के माध्यम से केवल भारत ही नहीं, बल्कि जगत के कल्याण का कर्ता भी बनने वाला है। मैं फिर से एक बार हृदय की अतल गहराईयों से महर्षि दयानंद जी को प्रणाम करके, उस तेजपुंज से आशीर्वाद माँगकर अपनी बात को आगे बढ़ाना चाहता हूँ।

मित्रो, महर्षि दयानंद के 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में आने वाले वाले दो सालों तक यह कार्यक्रम चलने वाला है। इसके साथ ही 2025 में आर्य समाज के जब डेढ़ सौ साल पूरे होंगे, वह क्षण पूरे देश के लिए और दुनियाभर में रहने वाले हर भारतीय के लिए अत्यंत गर्व का पल होगा।

> जिस उच्चारण के साथ पूर्वोत्तर के ट्राईब-बच्चे वेदों के मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ कि वेदी में आहुति दे रहे थे, वह देखकर मन को परमशांति मिल रही थी। घनघोर अंधेरे के बीच जैसे बिजली एक आशा का संचार करती है, यह घटना कुछ उसी प्रकार की घटना थी। मैं यज्ञ में आहुति दे रहा था, मगर मेरा संपूर्ण ध्यान बच्चों के उद्गार और उनके तेजोमुख मुखाकृति पर था। यह परिवर्तन केवल और केवल आर्य समाज ही कर सकता है।

मैंने पूर्वोत्तर भारत की बहुत यात्राएँ की हैं। जिस उच्चारण के साथ पूर्वोत्तर के ट्राईब-बच्चे वेदों के मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ कि वेदि में आहुति दे रहे थे, वह देखकर मन को परमशांति मिल रही थी। घनघोर अंधेरे के बीच जैसे बिजली एक आशा का संचार करती है, यह घटना कुछ उसी प्रकार की घटना थी। मैं यज्ञ में आहुति दे रहा था, मगर मेरा संपूर्ण ध्यान बच्चों के उद्गार और उनके तेजोमुख मुखाकृति पर था। यह परिवर्तन केवल और केवल आर्य समाज ही कर सकता है, क्योंकि आर्य समाज पूर्वोत्तर के वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्रांति यज्ञ का उद्घोष महर्षि दयानंद के विचारों के माध्यम से कर रहा है।

आर्य समाज ने वनवासी समुदायों के बीच **'रिश्ते बचाइए, देश बचाइए'** को आगे ले जाने का निर्णय लिया है। साथ ही, आपने प्राकृतिक कृषि को भी अपनाया है।

> प्राकृतिक कृषि से न केवल पृथ्वी और मिट्टी का कल्याण होने वाला है, बल्कि गौ माता का संरक्षण और संवर्धन भी होने वाला है और इस तरह पूरी दुनिया का भी कल्याण होने वाला है। मैं आचार्य जी को विशेष बधाई देना चाहता हूँ कि पूरी तन्मयता और लगन के साथ प्राकृतिक खेती के आंदोलन को पूरे देशभर के अंदर आपने चलाया है।

प्राकृतिक कृषि से न केवल पृथ्वी और मिट्टी का कल्याण होने वाला है,

बल्कि गौ माता का संरक्षण और संवर्धन भी होने वाला है और इस तरह पूरी दुनिया का भी कल्याण होने वाला है। मैं आचार्य जी को विशेष बधाई देना चाहता हूँ कि पूरी तन्मयता और लगन के साथ प्राकृतिक खेती के आंदोलन को पूरे देशभर के अंदर आपने चलाया है। मोदी जी ने भी आचार्य जी के इस आंदोलन को सरकार की ओर से पूरा समर्थन दिया है एवं लाखों किसानों को आज यूरिया और डी.ए.पी. से मुक्त करके पृथ्वी माता को फिर से एक बार गुणवत्ता पूर्ण अन्नदात्री बनाने और मानव शरीर को रोगों से मुक्त करने का अभियान चलाया है।

नशे के खिलाफ आपकी लड़ाई बहुत समायोजित है। इस लड़ाई से भी बहुत बड़ा फायदा होने वाला है। जनजाति क्षेत्र के अंदर **'गले लगाइए, दूरी मिटाइए'** कार्यक्रम आर्य समाज के अलावा और कोई नहीं कर सकता। आज सबसे ज्यादा जरूरत तो वनवासी क्षेत्र के अंदर हमारे जो बंधु-भगिनी हैं, उनके साथ खड़े होने की है। उनके जीवन के अंदर हमारे सनातन के मूल सिद्धांतों के माध्यम से प्रकाश लाने का काम करना है। इस दिशा में भी आप कार्य कर रहे हैं।

सालों से वेदों के सत्य पर जो मिट्टी जमी थी, एक ही समय में, एक ही जीवन के अंदर, उन सारी मिट्टियों को हटाकर वेदों को फिर से देदीप्यमान करने का काम महर्षि दयानंद ने किया।

महर्षि दयानंद उस जमाने में पैदा हुए, जब 18वीं सदी का भारत गुलामी की घनघोर अंधेरी रात्रि की सदी में जी रहा था। बाल्यकाल की एक छोटी सी घटना से प्रेरणा लेकर सत्य के शोध में निकला हुआ बालक, **'महर्षि दयानंद'** बनकर जब विश्व को त्याग गया, तब अपने पीछे एक महान परांपरा और विरासत छोड़ गया। सालों से वेदों के सत्य पर जो मिट्टी जमी थी, एक ही समय में, एक ही जीवन के अंदर, उन सारी मिट्टियों को हटाकर वेदों को फिर से देदीप्यमान करने का काम महर्षि दयानंद ने किया।

स्वदेशी और स्वभाषा के स्वाभिमान का दीपक पहली बार गुलामी के घनघोर रात्रि के अंदर निर्भीकता के साथ जलाने का काम महर्षि दयानंद ने किया। वे मानते थे कि वेदों का ज्ञान ही भारत की उन्नति का मूल कारण है और वेद-ज्ञान की अनदेखी के कारण ही भारत की अवदशा हो रही है। इसीलिए, उन्होंने इस वेद के ज्ञान को ही मूल आधार मानते हुए अपना पूरा जीवन जिया और **'वेदों की ओर लौटो'** का मंत्र दिया, जो आज भी ढेर सारे लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

महर्षि दयानंद जी समझ चुके थे कि व्यक्ति कितना ही महान् हो, उसका जीवन सीमित होता है। इसलिए, 1875 में आर्य समाज की नींव रखते

1875 से 1883 तक के कालखंड के अंदर आर्य समाज घना वटवृक्ष बन चुका था, जो उनके जाने के पश्चात भी लाखों प्रतिभावान शिष्यों के माध्यम से आगे प्रसार पाता गया। स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त, लाला लाजपतराय ये वे महापुरुष हुए, जिन्होंने देश के युवाओं और इच्छित लोगों के अंदर देशभक्ति, स्वभाषा तथा स्वधर्म का अभिमान जगाने का पुनीत कार्य किया।

हुए अपने विचारों का दीया हमेशा के लिए लोगों के सामने जलाने का काम महर्षि ने किया। 1875 से 1883 तक के कालखंड के अंदर आर्य समाज घना वटवृक्ष बन चुका था, जो उनके जाने के पश्चात भी लाखों प्रतिभावान शिष्यों के माध्यम से आगे प्रसार पाता गया। स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त, लाला लाजपतराय ये वे महापुरुष हुए, जिन्होंने देश के युवाओं और इच्छित लोगों के अंदर देशभक्ति, स्वभाषा तथा स्वधर्म का अभिमान जगाने का पुनीत कार्य किया। अफगानिस्तान से लेकर बगदाद तक, और तत्कालीन रंगून से लेकर जम्मू-काश्मीर, गुजरात तक, आर्य समाज को पहुंचाने का काम इन विभूतियों ने किया है।

आर्य समाज के गुरुकुल, डी.ए.वी. और अनेक शिक्षण संस्थान अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लोगों को, बच्चों को, युवाओं को, किशोरों को तैयार करने के केंद्र बन गए थे। असहयोग आंदोलन में लाला लाजपतराय और स्वामी सहजानंद ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी।

मित्रो, आजादी के आंदोलन का इतिहास कोई लिखना चाहे; मैं भी इतिहास का ही विद्यार्थी हूँ, और इसमें आर्य समाज का योगदान भूल जाए, तो वह अज्ञानी ही माना जाएगा। आजादी का इतिहास आर्य समाज के योगदान के उल्लेख के बिना अधूरा है। अनेक क्रांतिकारियों की निर्मित्ति का काम आर्य समाज के गुरुकुल की श्रृंखलाओं ने किया था। आर्य समाज के गुरुकुल, डी.ए.वी. और अनेक शिक्षण संस्थान अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लोगों को, बच्चों को, युवाओं को, किशोरों को तैयार करने के केंद्र बन गए थे। असहयोग आंदोलन में लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानंद ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी।

मित्रों, आर्य समाज ने 'बंग-भंग' का भी पुरजोर विरोध किया था। स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में हजारों

मित्रो, आर्य समाज ने 'बंग-भंग' का भी पुरजोर विरोध किया था। स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में हजारों आर्य समाज के अनुयायी बंग-भंग का विरोध करने के लिए समग्र देशभर से बंगाल पहुँचे।

आर्य समाज के अनुयायी बंग-भंग का विरोध करने के लिए समग्र देशभर से बंगाल पहुँचे। 'हैदराबाद मुक्ति-संग्राम' और 'गोवा मुक्ति-संग्राम' में भी आर्य समाज ही सबसे पहला झंडा लेकर आगे आया था।

'हैदराबाद मुक्ति-संग्राम' और 'गोवा मुक्ति-संग्राम' में भी आर्य समाज ही सबसे पहला झंडा लेकर आगे आया था। मैंने 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम', 'दमन-दीव और गोवा मुक्ति संग्राम' के सारे इतिहास को गृह-मंत्रालय की ओर से संकलित करने की पहल की है। जितने भी ऐतिहासिक दस्तावेज ढूँढते हैं, संकलित करते हैं और पढ़ते हैं, पता चलता है कि उसकी शुरुआत किसी न किसी महर्षि दयानंद के अनुयायी के द्वारा की गई है। आर्य समाज की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मैंने 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम', 'दमन-दीव और गोवा मुक्ति संग्राम' के सारे इतिहास को गृह-मंत्रालय की ओर से संकलित करने की पहल की है। ह कार्य अभी चल रहा है। जितने भी ऐतिहासिक दस्तावेज ढूँढते हैं, संकलित करते हैं और पढ़ते हैं, पता चलता है कि उसकी शुरुआत किसी न किसी महर्षि दयानंद के अनुयायी के द्वारा की गई है। आर्य समाज की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्त्व में 'असहयोग आंदोलन' में योगदान भी दिया गया, और धर्म-धर्मांतरण के निजाम की नीतियों का खुलकर विरोध भी इस समाज के द्वारा किया गया।

1937 में हैदराबाद के निजाम ने आर्य समाज की वार्षिक बैठकों पर रोक लगा दी। इस अत्याचार का भी आर्य समाज ने निर्भीकता से डटकर सामना किया। महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्त्व में 'असहयोग आंदोलन' में योगदान भी दिया गया, और धर्म-धर्मांतरण के निजाम की नीतियों का खुलकर विरोध भी इस समाज के द्वारा किया गया।

मित्रों, 1857 की क्रांति की विफलता के बाद पूरा देश बिखर गया था। लगता था कि असंख्य कालों तक हम गुलाम ही रहेंगे, लेकिन देखत ही देखते 90 साल के अल्पकाल के अंदर हमारा देश स्वतंत्र हो गया। उस वक्त महर्षि दयानंद ने इस बात को दूर से देख लिया था कि इस देश की एक भाषा तय करनी पड़ेगी, संपर्क भाषा बढ़ानी पड़ेगी, इसीलिए स्वामीजी ने बोला भी हिन्दी में, लिखा भी हिन्दी में और देश को जीया भी हिन्दी में। संस्कृत के पंडित होने के बावजूद, मातृभाषा गुजराती होने के बावजूद, सारे सिद्धांतों को हिन्दी में समाहित करके रखना उस महामानव की दूरदर्शिता थी।

जब भी मैं किसी को 'नमस्ते' करता हूँ, तो महर्षि दयानंद को जरूर याद करता हूँ... आज जब हम 'नमस्ते' कहते हैं, तो हमेशा याद रखियेगा कि यह सर्वकालीन एवं संपूर्ण भारतीय अभिवादन महर्षि दयानंद की देन है और इसे भारत कभी छोड़ नहीं सकता।

जब भी मैं किसी को 'नमस्ते' करता हूँ, तो महर्षि दयानंद को जरूर याद करता हूँ। महर्षि दयानंद न होते तो आज हम सभी 'हलो' कह रहे होते। आज जब हम 'नमस्ते' कहते हैं, तो हमेशा याद रखियेगा कि यह सर्वकालीन एवं संपूर्ण भारतीय अभिवादन महर्षि दयानंद की देन है और इसे भारत कभी छोड़ नहीं सकता।

हिन्दू धर्म के अनुयायी, आर्य समाज के अनुयायी कभी संकुचित हो ही नहीं सकते। हम तो समग्र ब्रह्मांड को अपना मानकर चलने वाले लोग हैं।

मित्रों, महर्षि दयानंद ने ऋग्वेद को, ऋग्वेद के इस वाक्य को कि ''एक ही परमात्मा को ज्ञानी लोग अनेक नाम से पुकारते हैं'' नया स्वरूप एवं व्याख्या देकर पूरे विश्व के अंदर हमारे धर्म की अवधारणा की विशालता का परिचय दिया है। हिन्दू धर्म के अनुयायी आर्य समाज के अनुयायी कभी संकुचित हो ही नहीं सकते। हम तो समग्र ब्रह्मांड को अपना मानकर चलने वाले लोग हैं। "ईश्वर को अनेक रूप में देखने वाले सभी लोग एक ही दिशा में जाते हैं" इस वाक्य को महर्षि दयानंद ने पूरी दुनिया के अंदर पहुँचाया है। उनके कहे हुए बातों पर उनके यशस्वी शिष्यों ने वास्तविक काम किया है।

आर्य समाज ने डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर से शिक्षा-क्रांति की नींव रखी। इस समाज ने वेद-विद्या के केंद्रों एवं गुरुकुल कांगड़ी जैसे विद्यालयों की स्थापना किया, जिसके माध्यम से वंचित वर्ग के बच्चों का निर्माण शुरू हुआ।

इस समाज के संरक्षण में अनाथालयों का निर्माण हुआ, महिला-शिक्षा का काम शुरू हुआ, विधवाओं के लिए महिला-आश्रमों की स्थापना हुई और विधवा-विवाह का भी इस समाज ने समर्थन किया।

लंबी और दुरूह समुद्री यात्राएँ कर महर्षि के अनुयायियों ने मारिसस, सूरीनाम, गयाना, केन्या जैसे अनेक देशों में आर्य समाज की स्थापना की और आज विश्व के 34 देशों के अंदर आर्य समाज का संगठन विशाल वटवृक्ष बनकर खड़ा है।

इस समाज के संरक्षण में अनाथालयों का निर्माण हुआ, महिला-शिक्षा का काम शुरू हुआ, विधवाओं के लिए महिला-आश्रमों की स्थापना हुई और विधवा-विवाह का भी इस समाज ने समर्थन किया। इतने बहुसंख्य काम एक जीवन के अंदर करना तो छोड़िए, इसकी संकल्पना भी करना, असंभव है। एक व्यक्ति अपने अल्प-जीवन के अंदर इतने सारे सामाजिक एवं राजनीतिक आयामों को कैसे छू सकता है? नारायण और, इतना ही नहीं, इसके समानान्तर अनुयायियों की सेना खड़ी करना, जो उनके जाने के बाद, भी उनके जन्म के 200 वर्षों के बाद भी दिल्ली के सभागार और विश्व के समाज में आर्य समाज की ज्योति जला रही हैं, सचमुच भागीरथ कार्य ही है।

आज समूचा भारत महर्षि दयानंद के प्रति कृतज्ञता भाव के साथ है। उनके योगदानों से विश्व अपरिचित नहीं है और वह दिन दूर नहीं, जब महर्षि दयानंद के प्रति समूचा विश्व युगों तक कृतज्ञता का भाव रखेगा, ऋण-स्वीकार के भाव से रहेगा। मुझे इस तथ्य को प्रस्तुत करने में कोई दुविधा नहीं है। लंबी और दुरूह समुद्री यात्राएँ कर महर्षि के अनुयायियों ने मारिसस, सूरीनाम, गयाना, केन्या जैसे अनेक देशों में आर्य समाज की स्थापना की और आज विश्व के 34 देशों के अंदर आर्य समाज का संगठन विशाल वटवृक्ष बनकर खड़ा है।

मित्रो, मैं आज यहां आया हूँ तब आप लोगों को जरूर कहना चाहता हूँ कि आर्य समाज के कार्यों को नई गति देने की जरूरत है। दिशा न बदले, मगर गति बढाने की आवश्यकता है, व्याप्तता बढ़ाने की जरूरत है। गति और व्याप्तता बढ़ाकर हमें आगे बढ़ना पड़ेगा, तब ही देश के सामने जो आज चुनौतियां हैं, उसका सामना कर पाएँगे। वेद का ज्ञान, स्वभाषा, हमारी सांस्कृति, शिक्षा के मूल सिद्धांत, तैत्तरीय उपनिषद के आधार पर शिक्षा, अंधविश्वास का उन्मूलन, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, स्वदेशी, इन नाना विषयों पर यदि कोई काम कर सकता है, तो आर्य समाज ही कर सकता है। आर्य समाज के प्रयासों की उस समय जितनी जरूरत थी, उतनी ही जरूरत आज भी है, और आज यह हमारे लिए आशा का बहुत बड़ा जीवंत स्रोत है।

देश में नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार है। सरकार के सारे कार्यकलापों के बारे में महामहिम राज्यपाल जी ने यहाँ बताया। आप बारीकी से देखेंगे तो सरकार के ये सारे इनिशिएटिव्स आर्य समाज के मूल सिद्धांतों से ही प्रेरित हैं। स्वभाषा में बात करना आर्य समाज का ही सिद्धांत है। समृद्ध राष्ट्र की कल्पना करना, आर्य समाज का ही विचार है। दुनिया में देश का सम्मान बढ़ाना, आर्य समाज का ही स्थापित लक्ष्य है। योग और आयुर्वेद को पुर्नजीवित करना, हमारी स्वसंस्कृति की ओर लौटना, आर्य समाज की ही वैचारिकी है। इन सिद्धांतों से संबंधित व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रोत्साहन हेतु इनको सरकार पुरस्कृत कर रही है, एवं इनकी योजनाओं को गति दे रही है।

मैं आज आर्य समाज से विनम्रतापूर्वक आह्वान करना चाहता हूँ कि अपने सिद्धांत संबंधी सारी चीजों के क्रियान्वयन के लिए जुड़ जाइए एवं गति बढ़ाइए। आर्य समाज के काम को हर युवा तक पहुँचाने के लिए हम मिलकर आगे बढें, इस निहितार्थ यही सुअवसर है। आर्य समाज की स्थापना का 150वाँ साल और महर्षि दयानंद की 200वीं जन्मजयंती, फिर से द्रुत गति से आगे बढ़ने एवं प्रत्येक आर्य समाज के बंधु-भगिनी का महर्षि दयानंद के लक्ष्य के प्रति स्वयं को पुन: समर्पित करने का साल है। यहीं से नई ऊर्जा के साथ हम सब आगे बढें, यही मेरी आपसे अभ्यर्थना है।

आप लोगों से मिलने की बहुत इच्छा थी। आचार्य जी और स्वागत-समिति ने मुझे बुलाया, इसके लिए मैं हमेशा उनका ऋणी रहूँगा, और महर्षि दयानंद के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए मेरे जीवन के अंत तक जो भी करना पड़े, करने के लिए मैं हमेशा उपलब्ध रहूँगा। इन्हीं वचनों के साथ आप सभी को मेरा प्रमाण एवं नमस्कार!

प्रेरक प्रसंग **मारीशस में आर्यसमाज, जब सैनिक विद्रोह पर तुल गये**

पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने लिखा है, ''मारीशस में आर्यसमाज की स्थापना उसी भाँति हुई जैसे हवा कहीं से किसी बीज को उड़ाकर ले जाए और किसी दूर की भूमि पर जा पटके और वह बीज वहाँ ही उग आये।''

मारीशस में आर्यसमाज का बीज बोने और उसे अंकुरित करने वाले महारथी थे- श्री रामशरणजी मोती, वीर खेमलालजी वकील, श्री केहरसिंह (गाँव चिदा, जिला फिरोजपुर, पंजाब), श्रीरामजीलाल तथा श्री चुन्नीलाल आदि (चीमनी, जिला हिसार, हरियाणा), श्री हरनामसिंह (झझर, हरियाणा के), श्री मंसासिंहजी जालन्धर, जिला पंजाब के तथा श्री गुरप्रसाद गोपालजी आदि मारीशस निवासी थे।

श्री रामशरणजी मोती ने पंजाब से कुछ पुस्तकें मँगवाई थीं। उनमें रद्दी में आर्यपत्रिका लाहौर के कुछ पन्ने थे। इन्हें पढ़कर वे प्रभावित हुए। उस दुकानदार से उन्होंने 'आर्यपत्रिका' का पता लगाया। इस पत्रिका को पढ़ते-पढ़ते वे आर्यसमाजी बन गये।

साहस के अंगारे वीर खेमलालजी के आर्य बनने की कहानी विचित्र है। एक सैनिक टोली मारीशस आई। उनमें कुछ आर्यपुरुष भी थे। उनकी बदली हो गई। जाते-जाते वे कुछ पुस्तकें वहीं दे गये। श्री भोलानाथ हवलदार एक सत्यार्थप्रकाश की प्रति श्री खेमलाल को दे गये। श्री खेमलाल सत्यार्थप्रकाश पढ़कर दृढ़ आर्य बन गये।

श्री रामशरण मोती ने रिवरदी जाँगील में आर्यसमाज का आरम्भ किया तो खेमलालजी ने मारीशस की राजधानी पोर्ट लुइस व क्यूर पाइप में वेद-ध्वजा फहरा दी। पोर्ट लुइस के आर्यपुरुष एक होटल में एकत्र होते थे। ये लोग पाखण्ड-खण्डन खूब करते थे। पोप शब्द तो सत्यार्थप्रकाश में है ही। वीतराग स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने लिखा है कि इन धर्मवीरों ने पोप के अनुयायियों के लिए 'पोपियाँ' शब्द और घड़ लिया।

मेरी पाठकों से, आर्य कवियों से व लेखकों से सानुरोध प्रार्थना है कि मारीशस के उन दिलजले दीवानों की स्मृति को स्थिर बनाने के लिए पोप के चेलों के लिए 'पोपियाँ' शब्द का ही प्रयोग किया करें। इस शब्द को साहित्य में स्थायी स्थान देना चाहिए। अभी से गद्य के साथ पद्य में भी इस अद्भुत शब्द के प्रयोग का आन्दोलन मैं ही आरम्भ करता हूँ-

विश्व ने देखा कि पोपों
के सभी गढ ढह गये।
पोप दल और पोपियाँ
सारे बिलखते रह गये॥
वेद के सद्ज्ञान से फिर
लोक आलोकित हुआ।
मस्तिष्क मन मानव का जब
फिर धर्म से शोभित हुआ॥

-प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

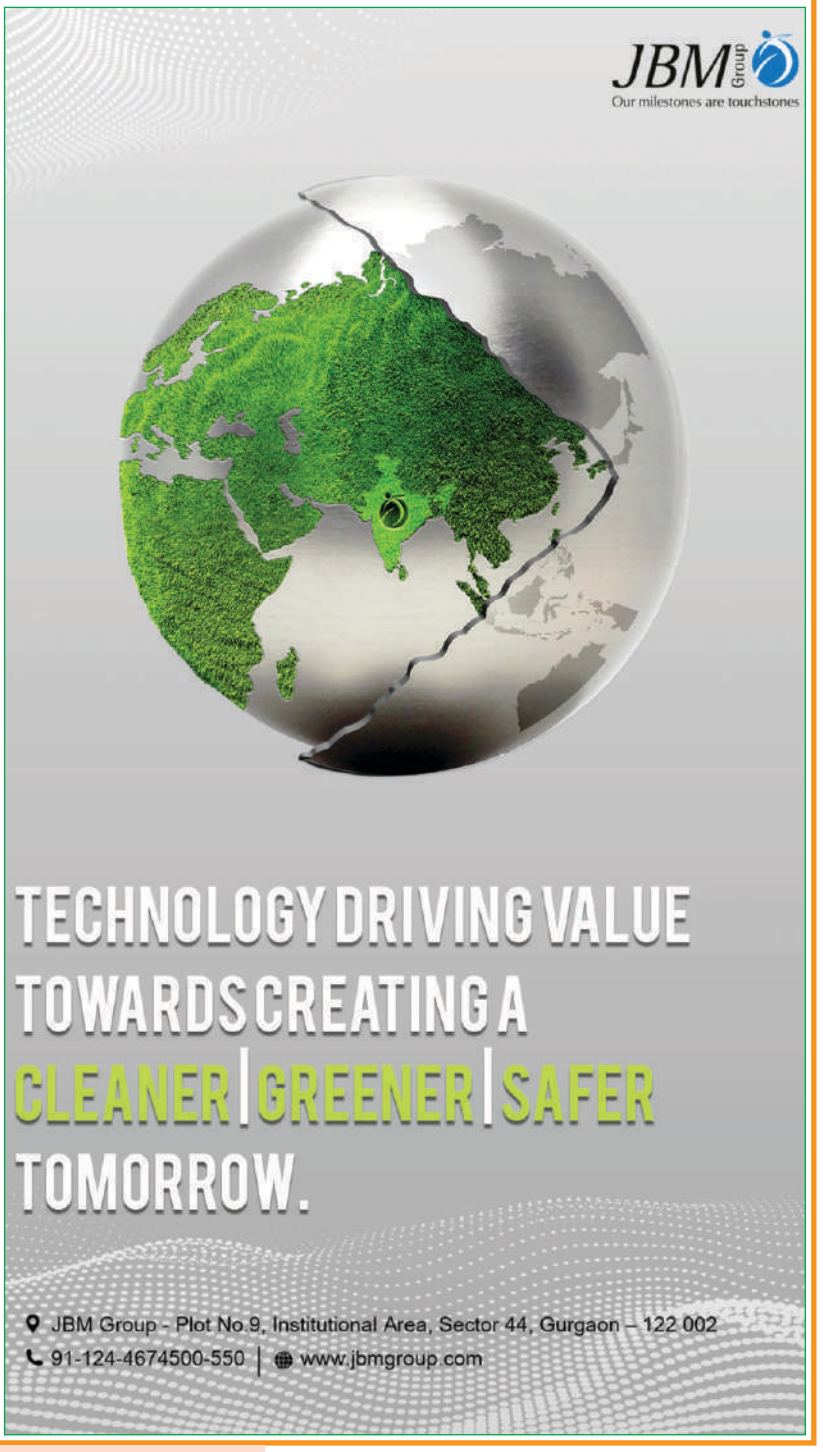

आर्य समाज के सेवाकार्यों का अवलोकन करते हुए माननीय गृहमंत्री जी एवं महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

गृहमंत्री जी का स्वागत करते हुए सभा अधिकारी एवं कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारणियां

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के अंतर्गत विशिष्ट प्रतिभावान विद्यार्थी शुभम एवं निष्ठा के अदम्य साहस और अपार उत्साह को देखकर आशीर्वाद देते हुए श्री अमित शाह जी तथा आचार्य देवव्रत जी

आर्य वीरदल/वीरांगना दल के बच्चे सैनिक अभिवादन करते हुए

आर्य समाज के गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों का अभिवादन स्वीकार करते हुए एवं सहयोग तथा महिला स्वरोजगार योजना की जानकारी लेते हुए

आर्यवीर/वीरांगनाएं व्यायाम प्रदर्शन करते हुए एवं सभा द्वारा संचालित आर्य विद्यालय के बच्चों का अभिवादन स्वीकारते हुए

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 27 मार्च, 2023 से रविवार 2 अप्रैल 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/31 मार्च, 2023 (बुध,वीर, शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 मार्च, 2023

आर्य विद्यालयों, आर्यवीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के होनहार बच्चों ने ज्वलंत मुद्दों पर प्रेरक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां तथा ऐतिहासिक नाटकों का मंचन किया

महर्षि दयानंद और आर्य समाज के इतिहास पर आधारित सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत करते हुए

प्राकृतिक खेती करिए, जल, जमीन, जीवन बचाइए की प्रेरणा देते हुए

नशामुक्त समाज बनाइए, यौवन बचाइए का संदेश देते हुए

परिवार बचाइए, रिश्ते बचाइए, गले लगाइए, दूरी मिटाइए की आवश्यकता का अनुभव कराते हुए

ले लो बधाई दे दो बधाई, और महर्षि दयानंद की महिमा गाते हुए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट पिंटर्स, युनिट न.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-90 से से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह